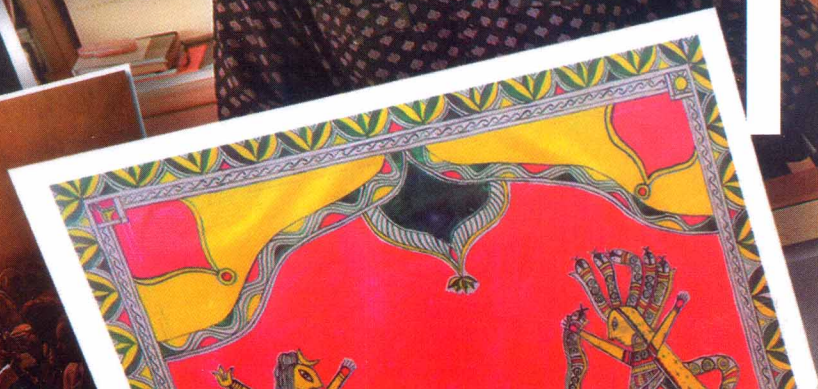
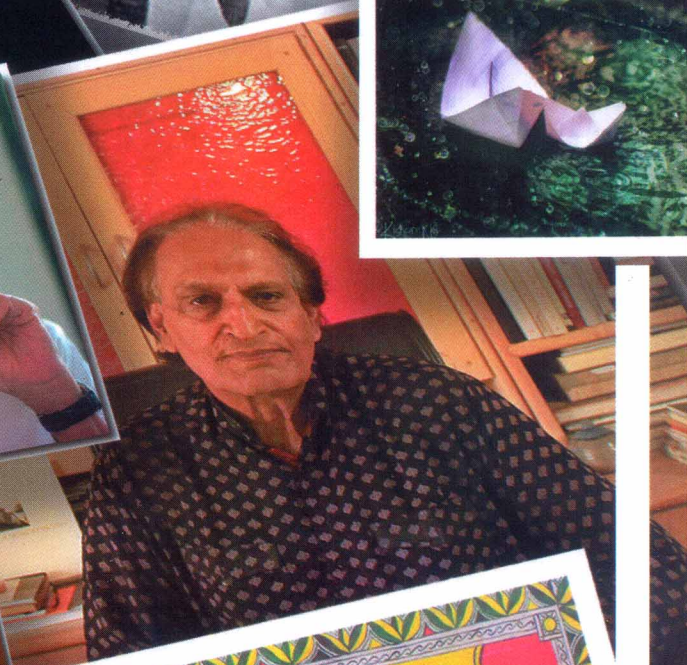
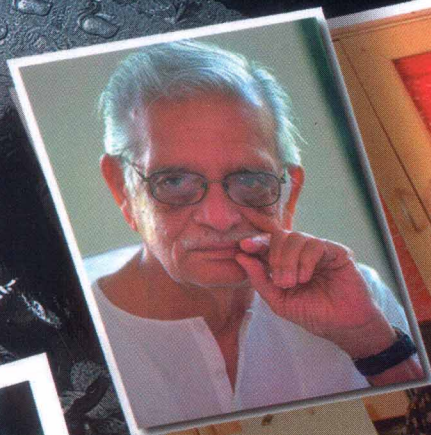
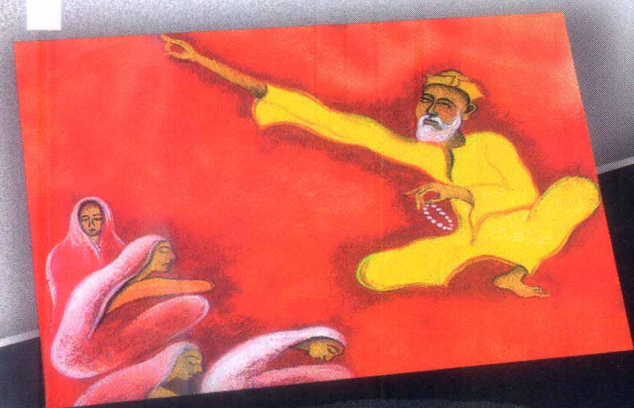
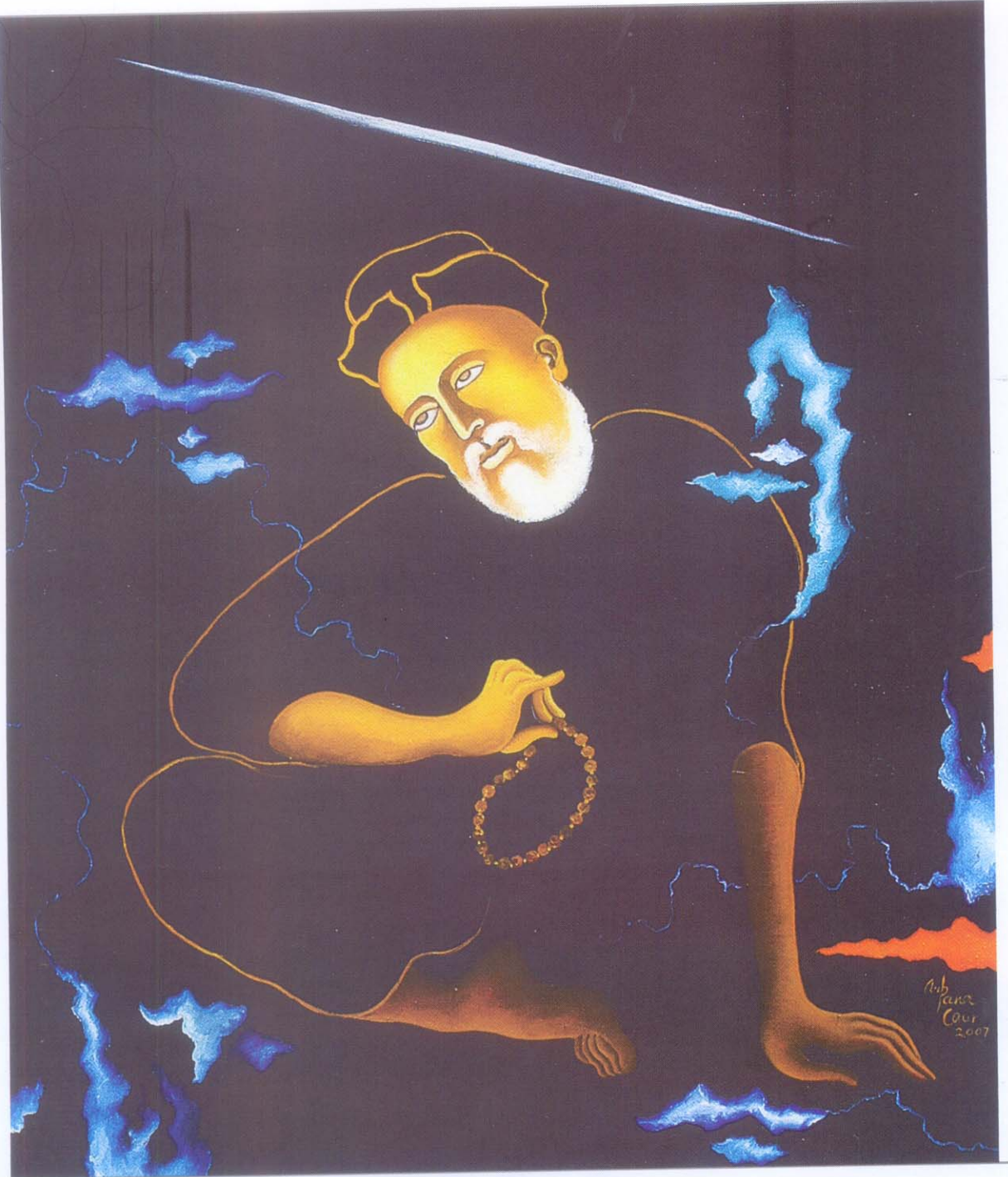


मासिक पत्रिका, सितंबर 2019, वर्ष: 4, अंक: 11, मूल्य: ₹85

उत्सव का संगम





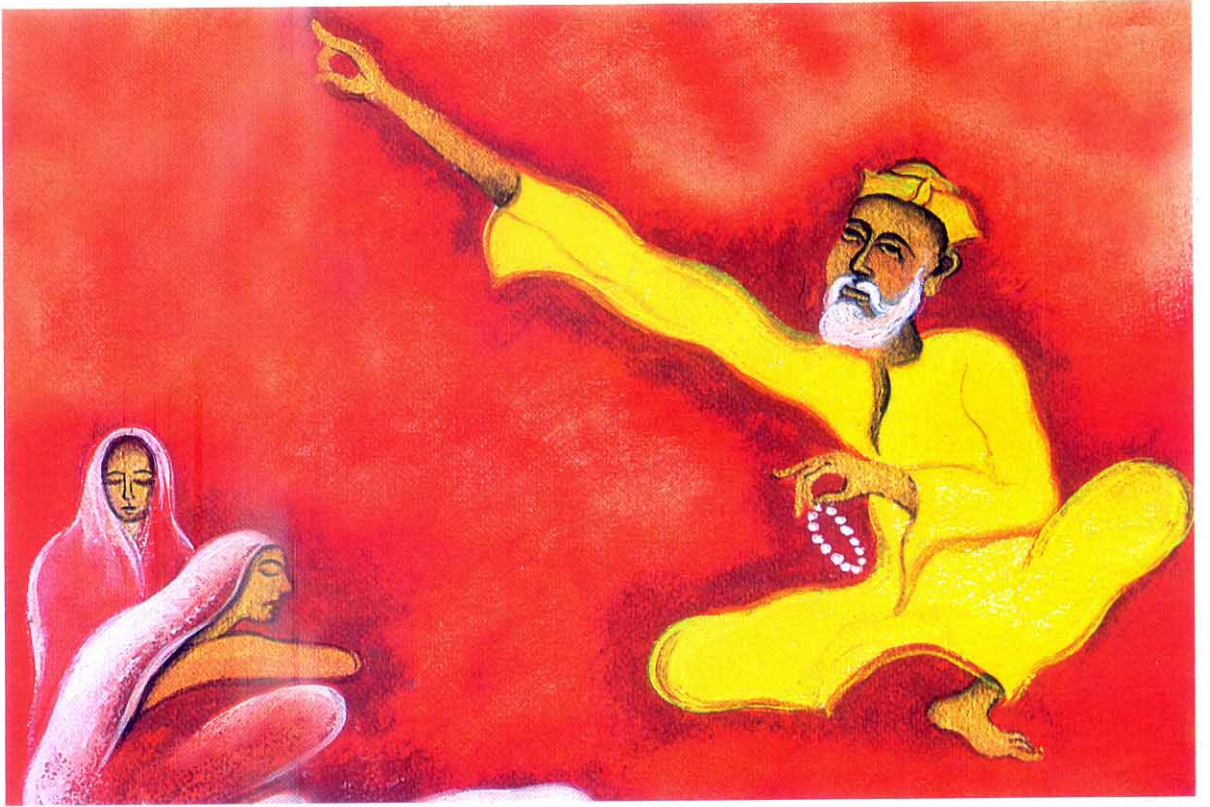
रंगों के शहर में गुरु नानक

देव प्रकाश चौधरी

रंगों में गुरु नानक की साधना को दिखाने की अर्पणा कौर की यात्रा भी साधारण नहीं है। यह जिंदगी के सत्य को आध्यात्मिक और दार्शनिक ऊंचाई देने की एक कलात्मक यात्रा है।

हर समय की अपनी कहानी होती है। हम अपने समय में उसे सुनते हैं। कई बार उन कहानियों में हमारी दिलचस्पी नहीं होती, क्योंकि वहां समय की दीवार खड़ी होती है। लेकिन, वही कहानी जब किसी कला के जरिए हमारे सामने आती है तो फिर उस समय की दीवार में कई खिड़कियां खुलती हैं। मसलन— आस्था की खिड़की, जिज्ञासा की खिड़की, कुछ कही गई बातों की खिड़की और कुछ अनकहे दास्तानों की खिड़की। इन खिड़कियों के जरिए कई बार हम आस्था से जिज्ञासा की ओर अग्रसर होते हैं और जिज्ञासा से आस्था की ओर। कई बार कुछ कही गई बातों को सुनते हुए कुछ कहने से रह गए शब्दों की ओर। इन खिड़कियों की आज हमें कितनी जरूरत है, इस पर बहस हो सकती है। ऐसी बहस की जरूरत भी है। ऐसी ही बहस का प्रांगण हम सब मशहूर चित्रकार अर्पणा कौर की कला में पाते हैं, जहां आस्था की खिड़कियां बिना किसी परदे की हैं और हमें जिंदगी को लेकर कई तरह की नई बातें बताती हैं। वैसे तो उनकी कला की दुनिया बहुत बड़ी है, लेकिन जब उनकी कला में ध्यान में बैठे मिलते हैं बुद्ध... तो उस आस्था की खिड़की से कुछ उत्सव के स्वर हमें भी सुनाई पड़ते हैं। जब उनकी कला में आशीष से भरे गुरु नानक के हाथ, रंग की एक दोपहर में खोलते हैं संसार का द्वार, तो जिंदगी के रास्ते खुद-ब-खुद खुलते चले जाते हैं।

गुरु नानक की दुनिया है भी अनूठी। उन्होंने परमात्मा को गा-गाकर पाया। इसलिए उनकी खोज अद्भुत है। दिल को छूती है। एक कहानी है, उनकी जिंदगी की। आपने भी सुनी होगी। कलाकार अर्पणा कौर की कला पर बात करते हुए कहानी को एक बार फिर से सुनना जरूरी है। वह अंधेरी रात थी। शायद भादों की अमावस। बादलों की गड़गड़ाहट और बीच-बीच में बिजली की चमक। बारिश सब कुछ



बहा लेना चाहती थी। पूरा गांव डर में सिमटा हुआ। लेकिन अकेले नानक अपने में मग्न। वे गा रहे थे। रात देर तक वे गाते रहे। उनकी मां डर गई। आधी रात से ज्यादा बीत गई थी। नानक के कमरे का दीया जल रहा था। दरवाजे पर नानक की मां ने दस्तक दी और कहा, 'बेटे! अब सो भी जाओ। रात करीब-करीब जाने को हो गई।' नानक चुप हो गए। और तभी रात के अंधेरे में एक पपीहे ने जोर से कहा, 'पियू-पियू।'

नानक ने कहा, 'सुनो मां! अभी पपीहा भी चुप नहीं हुआ। अपने प्यारे की पुकार कर रहा है, तो मैं कैसे चुप हो जाऊं? इस पपीहे से मेरी होड़ लगी है। जब तक यह गाता रहेगा, पुकारता रहेगा, मैं भी पुकारता रहूंगा। और इसका प्यारा तो बहुत पास है, मेरा प्यारा बहुत दूर है। जन्मों-जन्मों गाता रहूं तो ही उस तक पहुंच सकूंगा।' नानक ने फिर गाना शुरू कर दिया। इसलिए कहते हैं, गुरु नानक ने परमात्मा को गा-गाकर पाया। परमात्मा को पाने की यह साधना निश्चित रूप से साधारण नहीं रही होगी। परमात्मा को पाने की साधना साधारण हो भी नहीं सकती। निश्चित तौर पर रंगों में गुरु नानक की साधना को दिखाने की अर्पणा कौर की यात्रा भी साधारण नहीं है। यह जिंदगी के सत्य को आध्यात्मिक और दार्शनिक ऊंचाई देने की एक कलात्मक यात्रा है। लेकिन इसकी शुरुआत कैसे हुई? अगर गुरु नानक अर्पणा कौर की कला में आए, बार-बार आए तो इसे क्या महज संयोग माना जाए। या फिर इसके लिए उन्होंने तैयारी की?

यह बात तो सच है कि अर्पणा कौर देश और दुनिया की उन कलाकारों में से हैं, जो मानती हैं कि भविष्य की आहट हमें हमेशा आने वाले समय में नहीं मिलती। बीते अतीत में भी उपलब्ध होती है। बीते अतीत में परंपरा के जितने उत्सवधर्मी स्वर हैं, जिंदगी से जुड़े हुए गीत हैं, उन सबकी उनकी कला में सहज मौजूदगी रही है। लेकिन हमेशा किसी बड़ी श्रृंखला पर काम करने के लिए एक खास किस्म की तैयारी या 'रचनात्मक ईंधन' की जरूरत होती है। क्या उन्होंने भी ऐसा किया? ऐसे सवालों का जवाब अगर कलाकार दे तो सृजनात्मक यात्रा की सही तस्वीर सामने आती है। लेकिन कला रचना के बाद खुद



अपनी रचना प्रक्रिया पर बोलना उन्हें बहुत भाता नहीं, शायद इसकी वजह यह भी हो सकती है कि वह एकांत की कलाकार हैं। वर्जीनिया वुल्फ ने कभी अपनी डायरी में लिखा था- 'मैं सिर्फ अकेले में रहना चाहती हूँ, जिस दिन सम्मानों की तरफ भागूंगी, लिखना बंद कर दूंगी।' वुल्फ की तरह ही अर्पणा कौर अकेलेपन को स्वीकार करती हैं।

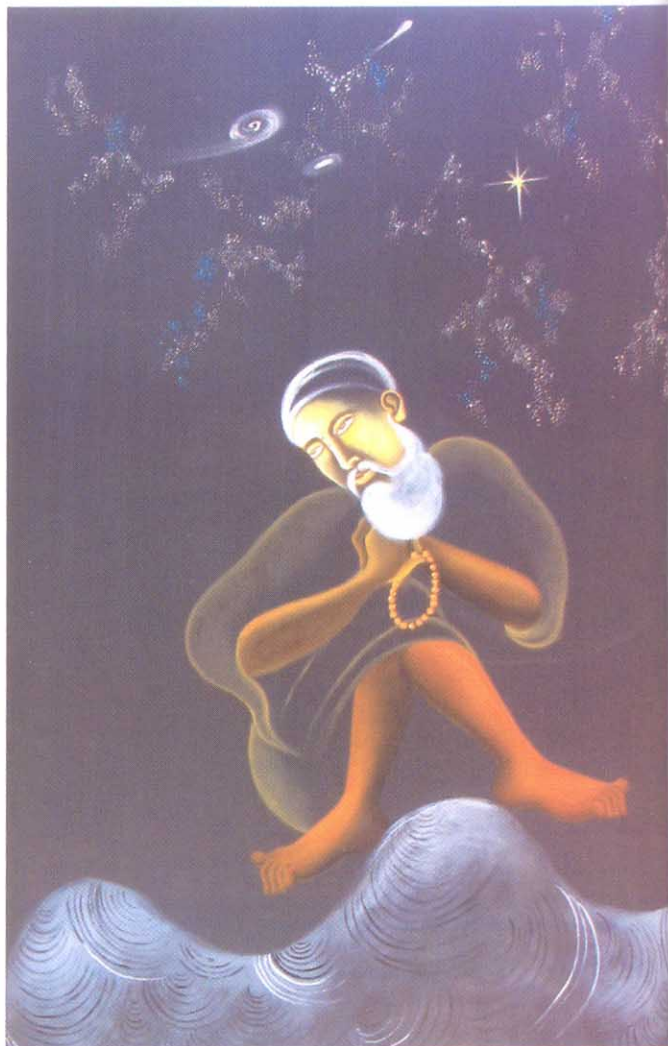
फिर भी, वर्षों से उनकी कला को देखते-सुनते-गुनते और टुकड़े-टुकड़े में हुई बातों को समेटने के बाद नानक शृंखला को लेकर उनके कुछ विचार हमें मिले, जिन्हें जानते हुए उनकी कला के प्रति उत्सुकता जगती है। टुकड़े-टुकड़े में हुई उनसे अनगिनत बातचीत को एक सूत्र में पिरोने पर कुछ तस्वीर उभरती है- 'गुरु नानक शृंखला के पीछे की कहानी दरअसल मेरी भी एक यात्रा है। इसे आप आस्था की यात्रा, संस्कार की यात्रा या फिर भविष्य के लिए अतीत की एक यात्रा कह सकते हैं। इसके लिए मैं अपनी मां अजीत कौर (मशहूर साहित्यकार) और संत गुरु संजीव जी की शुक्रगुजार हूँ कि उन्होंने गुरु नानक की दुनिया से मेरा परिचय कराया।' गुरु नानक को लेकर कौर ने अनगिनत चित्र बनाए। वर्षों तक लगातार काम करती रहीं। इस शृंखला में उनके कई चित्र 'जनी' शीर्षक से हैं। यह यात्रा कई तरह से कई रूप में है। एक तो गुरु नानक भौगोलिक यात्रा करते हैं। दूसरे नानक बाहर से अपने भीतर की यात्रा करते हैं। तीसरी यात्रा परमात्मा की ओर है। लेकिन यहां कलाकार अर्पणा कौर एक चौथी यात्रा भी करती हैं। गुरु नानक के विचारों को लेकर पेंटिंग देखने वाले शख्स के दिलो-दिमाग तक की यात्रा। गुरु नानक के बारे में इससे पहले भी हमने सुना होगा। लेकिन इनकी कला के जरिए जिस गुरु तक हम पहुंचते हैं, वे कुछ अलग, नए से लगते हैं। सच्ची कला में हम जानी-सी कहानी को भी अप्रत्याशित ढंग से सुन पाने का सुख पाते हैं।

कौर गुरु नानक की कहानी सुनाती हैं, 'गुरु नानक जी कभी पैदल चीन तक गए थे। वहां उन्हें लामा नानक कहते हैं। गुरु नानक बगदाद भी गए। वहां एक गुरुद्वारा मौजूद है। 2003 में अमेरिका ने उस पर बमबारी की थी, तब गुरुद्वारे का अस्तित्व खत्म हो गया था। लेकिन उस गुरुद्वारे को फिर से बनाया गया।

मैं 1986 में वहां गई थी, जब इराकियों ने हमें वहां आमंत्रित किया था। यह शायद उनका पहला और एकमात्र अंतरराष्ट्रीय कला बेनाले था। मैं उस दल में सबसे कम उम्र की कलाकार थी, अन्य कलाकार थे— शंखो चौधरी, नागजीभाई और ब्रूटा। इसी तरह, मैंने सुना था कि नानक जी सिक्किम भी गए थे और 18,000 फीट की ऊंचाई पर चढ़ गए। वहीं से नानक जी चीन तक पहुंचे थे। इसलिए मैं अपनी मां के साथ सिक्किम तक गई। हम वहां ब्रिगेडियर डी.जे. सिंह को जानते थे, जो वहां इंचार्ज थे और मैं उस जगह पर गई जहां से गुरु नानक जी चीन की ओर गए थे। वहां केवल सफेद पत्थरों की एक पंक्ति है, और मैंने उसे पार किया। भारतीय सेना ने मुझे दूरबीन से चीन की सेना दिखाई, वहां उनकी एक चेक पोस्ट थी। जब हम ऊपर गए तो हम ऑक्सीजन सिलेंडर लेकर गए, जबकि नानक जी वहां बिना किसी सहायता के पहुंचे थे। और फिर मैं वापस आई और गुरु नानक की इस सीरीज या श्रृंखला को किया। मैं पहले भी कभी-कभी नानक के चित्र बनाती रहती थी, लेकिन फिर मैंने इसे उनकी यात्राओं को दर्शाते या प्रतिबिंबित करते हुए लगातार चित्र बनाए। मेरा काम स्मिथसोनियन संग्रहालय में तीन साल तक 'लीजेंड ऑफ़ द सिख्स' नामक शो में दिखाया गया। अब वे काम सैन फ्रांसिस्को में हैं।' जिन लोगों ने कौर की कला में गुरु नानक को देखा है, उन्हें पता है कि कलाकार ने रंगों से गुरु नानक की प्रार्थना की है। यहां उनकी कला के ग्रामर यानी तकनीक पर बात करना बहुत जरूरी तो नहीं, लेकिन इतना जान लेना सही है कि नानक सीरीज की सभी कलाकृतियां, तैल चित्र हैं। वह अक्सर बड़े कैनवस पर काम करती हैं। रंगों के चयन में आपको सादगी तो मिलेगी, उदासी नहीं। उनकी कला की केंद्रीय कलात्मक मुद्रा संबोधन की है। हर हाल में वह जीवन की पूर्णता का आग्रह करती हैं।

वर्ष 2000 में बनाई गई उनकी एक कलाकृति का शीर्षक है 'मक्का'। गुरु नानक मक्का गए थे। कौर कहती हैं— 'गुरु नानक ने हर जगह की यात्रा की। और वह रुढ़ियों को तोड़ने वाले थे। जैसे वह जब मक्का गए, तो उन्होंने अपने पैर मक्का की तरफ रखे। लोगों ने विरोध किया तो उन्होंने कहा कि मेरे पैर उस दिशा में रख दो, जिधर अल्लाह न हों।' इस चित्र में एक आदमी गुरु नानक के पैर को हटाने की जिद में दिखाई देता है। चित्र में पीले रंग के साथ ब्रश का स्ट्रोक एक घटना बनाती है, जिसका जिक्र ऊपर कलाकार कर चुकी हैं। वैसे गुरु नानक की जिंदगी में घटनाओं की कमी नहीं है। अर्पणा कौर उनकी जिंदगी की एक और महत्वपूर्ण घटना का जिक्र करती हैं, 'नदी के किनारे रात के अंधेरे में, अपने साथी और सेवक मरदाना के साथ वे नदी तट पर बैठे थे। अचानक उन्होंने वस्त्र उतार दिए। बिना कुछ कहे वे नदी में उतर गए। नानक ने डुबकी लगाई। मरदाना सोचते थे कि क्षण-दो क्षण में बाहर आ जाएंगे। फिर वे बाहर नहीं आए। कुछ देर मरदाना ने राह देखी, फिर वह खोजने लग गए। फिर वह चिल्लाते लगे। नानक को सभी लोग प्यार करते थे। सारा गांव रोने लगा, भीड़ इकट्ठी हो गई। सारी नदी तलाश डाली। लेकिन कोई पता न चला। तीन दिन बीत गए। लोगों ने मान ही लिया कि नानक नहीं रहे। और तीसरे दिन रात अचानक नानक नदी से प्रकट हो गए। जब वे नदी से प्रकट हुए तो वह एक द्रष्टा थे। नए नानक थे।'।

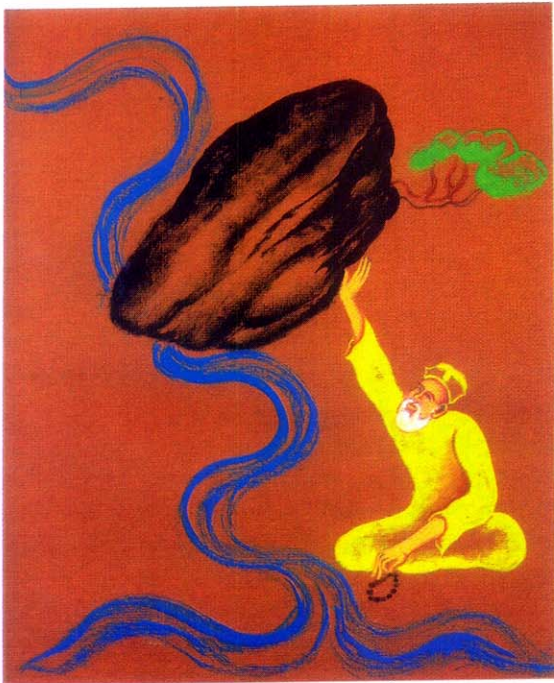
इस घटना पर कौर ने कई चित्र बनाए हैं। उसमें वर्ष 2001 में बनाई गई कृति 'इमर्शन' का जिक्र जरूरी है। लाल बैकग्राउंड



कौर गुरु नानक
की कहानी सुनाती हैं, 'गुरु नानक जी कभी पैदल चीन तक गए थे। वहां उन्हें लामा नानक कहते हैं। गुरु नानक बगदाद भी गए। वहां एक गुरुद्वारा मौजूद है। 2003 में अमेरिका ने उस पर बमबारी की थी, तब गुरुद्वारे का अस्तित्व खत्म हो गया था।

में पानी की लहरें, मछलियां और ध्यान में बैठे नानक। कौर कहती हैं— 'नानक नदी से लौटते तो परमात्मा होकर ही लौटते। फिर उन्होंने जो भी कहा है, एक-एक शब्द बहुमूल्य है। उन्होंने जाति का प्रतिकार करने के लिए सभी के लिए सामान्य रसोई घर की स्थापना यानी लंगर प्रणाली शुरू की थी। और उस वक्त भी औरतों पर उनकी सोच बेहद मौलिक और बराबरी वाली रही। वे यात्राओं पर जाते थे और जब भी वापस लौटते तो फिर अपनी खेती-बाड़ी में लग जाते। पूरे जीवन, जब भी घर वापस लौटते, तब अपना काम शुरू कर देते। जिस गांव में वे आखिर में बस गए थे, उस गांव का नाम उन्होंने करतारपुर रख लिया था— कर्ता का गांव। काम करने वालों का गांव नानक ने ही पहली बार कहा था कि औरतों और मर्दों के बीच कोई अंतर नहीं है। वे एक साथ बैठेंगे, परदे में नहीं।'।

उनकी जिंदगी में कहानियों और घटनाओं की कमी नहीं। अर्पणा कौर कहती हैं, 'गुरु नानक के बारे में बचपन से जो सुना, पढ़ा और महसूस किया, उन सभी को आकार देने के लिए एक जिंदगी काफी नहीं है। लेकिन गुरु नानक जब मेरे रंगों के बीच उभरते हैं तो हमेशा मुझे एक अद्भुत सुकून का अनुभव होता है।' कहते हैं, जहां मस्तिष्क और हृदय मिलते हैं, वहीं धर्म शुरू होता है। अगर मस्तिष्क अकेला रहे, तो विज्ञान पैदा होता है। अगर हृदय अकेला रहे, तो कल्पना का जगत, काव्य, संगीत, चित्र, कला पैदा होती है। और अगर मस्तिष्क और हृदय दोनों मिल जाएं, दोनों का संयोग हो जाए, तो हम आस्था में प्रवेश करते हैं। अर्पणा कौर आकारों के बीच, रंगों के सहारे मन और दिल को साधते हुए आस्था की जिस दुनिया में प्रवेश करती हैं, वहीं



हमें गुरु नानक की ढेर सारी छवियां मिलती हैं, ढेर सारे रूप मिलते हैं और कथाएं मिलती हैं। नानक शृंखला के उनके चित्र 'फेथ', 'आरती', 'डासिंग नानक', 'इमर्शन ईमर्जन्स', 'सेक्रिड थ्रेड', 'सच्चा सौदा', 'ट्रैवलर' और 'नानक इन ब्लिडिंग टाइम' हमें सिर्फ इतिहास में नहीं ले जाते, भविष्य के लिए रास्ते भी बनाते हैं।

इन रास्तों पर चलते हुए प्रेक्षक को एक अहसास हो सकता है कि अर्पणा कौर के चित्र, उनकी कला अपने समय की रिपोर्ट नहीं करती है। अपने काल से अलग एक ऐसी दुनिया में हमें लेकर चलती है, जो पारलौकिक-सा है। लेकिन उनकी कला की यही पारलौकिकता उन्हें अपने समय से बाहर छलांग लगाने की ताकत देती है और वह रंगों के साथ टहलने निकल पड़ती हैं। स्विटजरलैंड के चित्रकार पाल क्ली कहते हैं कि एक कलाकार को रेखाओं को टहलाने के लिए ले जाना चाहिए। अर्पणा कौर के यहां रंग टहलते हैं। आस्था के आंगन में, प्रार्थना को सुनते हुए, जिंदगी की बात करते हुए और कुछ कहते हुए।

एक कलाकार के साथ सबसे बड़ा सवाल यही होता है कि कला में कितना कहा जाए और कितना अनकहा छोड़ दिया जाए। सब कुछ कह डालने की कोशिश में कलाकार कभी-कभी बहुत आगे निकल जाता है। लेकिन कौर हमेशा अपनी कला के दर्शकों के साथ होती हैं। क्योंकि वह जानती हैं कि किसी भी कृति का सबसे बड़ा सच यही है कि वह शाश्वत नहीं होती, क्योंकि वह संपूर्ण कभी नहीं होती। अगर कोई कृति संपूर्ण हो गई तो फिर वह कलाकार की कृति नहीं, कोई दैवीय रचना ही हो सकती है। उत्सुकता बची हुई है तो कला हमारे लिए देखने का आग्रह करते हुए उदार बनी हुई है। ऐसी उदारता आप लेखिका माला दयाल की लिखी 'गुरु नानक' किताब में अर्पणा कौर के बनाए इलेस्ट्रेशन में भी देख सकते हैं। ताज्जुब की बात यह भी है कि नानक शृंखला में वह काले रंग के मोह से भी मुक्त हैं। कुछ एक चित्रों को छोड़ कर काले रंग का प्रयोग नहीं के बराबर है, जबकि वह सभी रंगों में काले रंग को सबसे महत्वपूर्ण मानती हैं— 'अन्य सभी रंगों की चमक टल जाने का इंतजार करें, अंत में काला रंग ही बचेगा।'।

हालांकि रंगों को वह जिंदगी की चादर से जोड़कर देखती हैं— 'हमारी जिंदगी एक चादर है और रंग हम खुद चुनते हैं। कभी लाल, कभी हरी, कभी नीली, कभी काली तो कभी सफेद भी। इसी चादर में समय झांकता है। सूरज उगता-डूबता है। प्रकृति इसी चादर में तो इंद्रधनुष खिलाती है। ऐसी ही एक चादर थी कबीर के पास। ऐसी ही चादर गुरु नानक ने भी बिछाई थी। ऐसी ही चादर पर बुद्ध का मौन पसरा था। ऐसी चादर हम सब के पास है, बस हम ओढ़ने की कला नहीं जान पाए, इसलिए हमारी चादरों के रंग नहीं खिलते।'। शायद जिंदगी में रंगों का खिलना बहुत आसान भी नहीं। एक साधना है, जिसके बाद हम खुद अपने लिए रंग चुनते हैं। उन्ही रंगों में तब कभी हमें भी गुरु नानक के गीत सुनने को मिल सकते हैं, क्योंकि रंगों के शहर में गुरु नानक बार-बार नहीं आते, लंबे इंतजार के बाद आते हैं।

लेखक चित्रकार व कला समीक्षक हैं। इनका कला पर नियमित लेखन रहा है। इस विषय पर कई किताबें भी लिखी हैं।